Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

भवभूति का भाव एवं भाषागत वैशिष्ट्य का अनुशीलन

इन्दल
पूर्व शोधच्छात्र,
संस्कृत विभाग,
बी0आर0डी0बी0डी0पी0जी0 कॉलेज, आश्रम बरहज
देवरिया, उत्तर प्रदेश,भारत।

शोधसारांश– भवभूति का काव्य प्रकर्ष भी समुन्नत कोटि का है। नाटकीय दृष्टि से भले ही उन्हें वह सफलता न प्राप्त हुई हो जो कालिदास या शूद्रक को प्राप्त है पर काव्य गुण की दृष्टि से भवभूति के नाटकों का महत्त्व कथमपि न्यून नहीं हैं। प्रो0 एस0के0 डे0 के अनुसार कालिदास के उत्तरवर्ती नाटककारों में कात्य प्रकर्ष की दृष्टि से नाटककार भवभूति आगे नहीं हैं।[4] काव्य धारा उनके सभी नाटकों में प्रवाहित हो रही है विशेषकर गीति पद्यों में जो सभी नाटकों में समान रूप से उपलब्ध है। वे मानव–भावनाओं के कवि हैं, जिनकी बहुरूपता में उनकी प्रवृत्ति विश्राम पाती है मानव प्रकृति की उन्हें महान परख है। साथ ही प्रकृति के रूप के दर्शन की भी उनमें क्षमता है।

मुख्य शब्द– **भवभूति, भाव, भाषागत, काव्य, संस्कृत, साहित्य, नाटक।**

महाकवि भवभूति संस्कृत साहित्य जगत् के विलक्षण विभूति हैं। उनकी सहज अनुभूति नाट्यदर्शन के द्वारा विश्व प्रसिद्ध हुई हैं। उन्होंने अपने हृदय निष्ठ सहज व्यापारों का सुन्दर सामंजस्य प्रस्तुत किया हैं। उनकी कविता वनिता कला और भावपक्ष दोनों पक्षों से समलंकृत है। जहाँ एक ओर उनके विभिन्न अवयव अलंकार, छन्द एवं सुमधुर शब्द विन्यास से विलसित है, वहीं दूसरी ओर रस, भाव एवं ध्वनि से उसका हृदय आप्लावित होकर सम्यक् विलास से उल्लसित हो रहा है। महाकवि भवभूति की शैली की यह एक असाधारण विशेषता है कि वे भाव के अनुरूप भाषा का प्रयोग करते हैं। और वे शब्द तथा अर्थतत्त्व के ज्ञाता हैं। काव्य में प्रौढ़ि तथा उदारता की उद्घोषणा करने वाले कवि का भाषा पर कितना अधिकार रहा होगा, यह प्रश्न सुस्पष्ट है। उन्होंने बड़े ही आत्म विश्वास से कहा है[1]–

यं ब्रह्माणमियं देवी वाग्वश्येवानुवर्तते।
उत्तरं रामचरितं तत्प्रणीतं प्रयोक्ष्यते।।

भाषा ही भाव–व्यञ्जित करने का साधन है। दूसरे शब्दों में वह भावों की वाहिका है। जिस प्रकार शरीर के बिना प्राण की सत्ता नहीं, उसी प्रकार भाषा के बिना भी भाषा की सत्ता नहीं। समर्थ कवियों में भाषा भाव का अनुगमन करती है। जिस प्रकार के भाव की वर्णना करनी है उसी प्रकार की भाषा ढल जायेगी। समर्थ कवियों की भाषा एक अत्यन्त तरल पदार्थ होती हैं जो किसी भी ढ़ाल पर ढल जाया करती है। यदि श्रृंगार–रस के वर्णन में कटुवर्ण बहुल भाषा होगी तो यह नितान्त अनुचित तथा अरुचिकर बात होगी। इसी प्रकार वीर तथा रौद्र रसों की वर्णना में कोमलकान्त पदावली वाली भाषा दिखायी पड़े तो अनवस्थान एवं अनौचित्यपूर्ण होकर रसभंग का कारण होगी। जब हम भवभूति की भाषा पर विचार करते हैं तो वे एक समर्थ कवि दिखायी पड़ते हैं और भाषा ज्ञान तथा उनकी ध्वनि पर भवभूति का असाधारण अधिकार है। कालिदास सरल भाषा के पक्षपाती थे पर भवभूति जैसा कि पहले संकेत किया है गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति थे। उनमें सरल शब्दावली का अभाव मिलेगा। भवभूति के नाटकों को सहसा रंगमंच पर देखने से पूर्व उनका अध्ययन–मनन अपेक्षित है तथा उनकी भाषा में भावों की अभिव्यक्ति की अपूर्ण शक्ति है। किसी दृश्य को उपस्थित करते समय भाषा उसे मूर्तिमान रूप में उपस्थित कर देती है।[2] समास रूप में हम भवभूति की काव्यशैली के विषय में इस प्रकार कह सकते हैं कि उनकी भाषा सुन्दरी सरस, सरल, प्राञ्जल, परिष्कृत और प्रसादपूर्ण होती हुई यथासर भाषाभाषिनी के रूप में स्थित होकर ओजस्विनी और कठोर हो जाती है। परन्तु उभयत्र वह कुछ मीठी सी मुस्कान लिए रहती है जिसके लिए पाठक लालायित हो उठता है और उसके मुँह में पानी आ जाता है। कहीं–कहीं पर मुहाबरेदार चुस्त भाषा का प्रयोग हुआ हैं। जिससे उनकी भाषा के मन्द मुस्कराहट में चुस्ती सी आ गयी है। अतएव वह अपने यौवन के विकास द्वार पर पहुँच जाती है। वे जहाँ जिस भाव को प्रस्तुत करना चाहते हैं। भाषा उस भाव को सहज रूप में सहसा ही प्रस्तुत कर देती है। उनके कथापेकथन यथावसर छोटे गम्भीर रसीले एवं चुटकीले हैं। कालिदास की तरह भवभूति की भी भाषा भी अपूर्व तरलता लिए हुए है। इन दोनों कवियों में भाषा के सम्बन्ध में कौन अधिक सक्षम है, इसका निर्णय करना कठिन है। भवभूति का उत्तर रामचरित भाषा की दृष्टि से अभिज्ञानशाकुन्तल की अपेक्षा न्यून नहीं है। जहाँ जैसा भाव है वहाँ वैसी ही भाषा का प्रयोग दोनों कवियों ने किया है। परन्तु महाकवि भवभूति कहीं–कहीं पाण्डित के फेर में पड़कर दुरुह भाषा का प्रयोग कर देते हैं। जिससे साधारण लोक दृष्टि से वे कुछ उपर बढ़ जाते हैं। भवभूति की भाषा में विद्ग्धता, पौढ़ता, उदारता, गुण–बहुलता, प्रसन्नता, विपुलार्थता, अर्थगुरूता, मधुरता, भावुकता आदि गुणों के दर्शन होते हैं। इनके साथ ही साथ उनका नाद सौन्दर्य अत्यन्त ही प्रभावशाली एवं चमत्कारोत्पादक है। तथा इन विशिष्ट गुणों से उनके महत्त्व को नितान्त उदात्त बना देते हैं। सबसे प्रधान गुण है भवभूति की वर्णन–पटुता प्रयासः यह आज्ञेय है कि भवभूति की भाषा बड़ी कठोर हैं। किन्तु इसके सत्य होते हुए भी, जब विषय का प्रवाह चलता है और कोई गम्भीर घटना प्रस्तुत होती है तो भाषा अपेक्षाकृत सरल हो जाती है। इसके अतिरिक्त भवभूति की भाषा का प्रधान गुण है विषय या दृश्य का प्रतिबिम्ब अंकित कर देना। मूर्त विषय की तो बात ही क्या अमूर्त मनोंभावों के चित्रण में भी भवभूति की भाषा सुतरां सफल और बेजोड़ है। भवभूति के गद्य अपेक्षाकृत अधिक कठोर तथा उबाने वाले हैं किन्तु गद्यभाग की संख्या पद्य से वैसे भी चतुर्थांश है और पद्य में वह दुरूहता भी नहीं है। डॉ0 बेलवल्कर का यह कथन उपयुक्त है कि कोई लेखक इस प्रकार अपने पद्य और गद्य को पूर्णतः दो भिन्न आधारों पर रखने में समर्थ नहीं हुआ है। कालिदास की सुकुमारता, कलाकारित और अलंकार विधान भवभूति में उपलब्ध नहीं होता पर भवभूति परिस्थिति के किसी विशिष्ट अंशों या विशिष्ट भावनाओं को लेते हैं और उनका क्रमिक रूप से सांगोपांग

वर्णन करते है। पाठक के मन में गम्भीर मनोंभावों की उद्‌बुद्धि कर देना जिसका उल्लेख अन्यत्र किया गया है। भावनाओं का वर्णन वे इतनी सच्चाई और ईमानदारी से करते हैं कि उन्हीं के साथ अपना तादात्म्य कर देते हैं। भावनाओं की वर्णना में जितनी सघनता भवभूति में दिखायी पड़ती है, उतनी अन्य किसी संस्कृत कवि में नहीं उपस्थित कर देना प्रिय नहीं। उन्हें भावों की वर्णना को अलंकारों के आदम्बरों में अलंकारों के आडम्बरों में भाव सौन्दर्य तो लुप्त हो जाता है केवल अलंकार ही रह जाता है। मानवीय भावों की गहराई में प्रविष्ट होकर उन्हें बड़ी गम्भीरता तथा मार्मिकता के साथ उपस्थित कर देना भवभूति की सबसे बड़ी सफलता है। हृदय में भावों का वर्णन सीधे शब्दों में करना कवि की विशेषता है। भावों की सघनता तथा विस्तार दोनों वस्तुयें भवभूति के नाटकों में सर्वत्र व्याप्त है। उत्तररामचरित में यदि करुण रस प्रसंग आया है तो वह लघु विस्तारी नही, दीर्घ विस्तारी है, पूरे नाटक में प्रसृत है। कोई वस्तु जब व्यापक हो जाती है तो प्रकृत्या सघनता की न्यूनता हो जाती है, पर भवभूति में विस्तार होने पर सघनता में वृद्धि हो जाती है। यदि करुणा का प्रसंग व्यापक होता है तो करुण की रसानुभूति भी व्यापक हो जाती है। दर्शक पाठक पात्र और स्वयं कवि भी उस रस सागर में गोता लगाता है। धन्य है एसे महाकवि कि सहृदय रसिकों को कौन कहे पत्थर भी रो पड़ते हैं–[3]

आर्थदं रक्षोभिः कनक हरिणच्छ्द्मविधिना।
तथा वृतं पायैर्त्यथयति यथा क्षालितमपि।
जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरामचरितै–
रपि ग्रावा रोदित्यपि दलित वज्रस्य हृदयम्।।

भवभूति का काव्य प्रकर्ष भी समुन्नत कोटि का है। नाटकीय दृष्टि से भले ही उन्हें वह सफलता न प्राप्त हुई हो जो कालिदास या शूद्रक को प्राप्त है पर काव्य गुण की दृष्टि से भवभूति के नाटकों का महत्त्व कथमपि न्यून नहीं हैं। प्रो0 एस0के0 डे0 के अनुसार कालिदास के उत्तरवर्ती नाटककारों में कात्य प्रकर्ष की दृष्टि से नाटककार भवभूति आगे नहीं हैं।[4] काव्य धारा उनके सभी नाटकों में प्रवाहित हो रही है विशेषकर गीति पद्यों में जो सभी नाटकों में समान रूप से उपलब्ध है। वे मानव–भावनाओं के कवि हैं, जिनकी बहुरूपता में उनकी प्रवृत्ति विश्राम पाती है मानव प्रकृति की उन्हें महान परख है। साथ ही प्रकृति के रूप के दर्शन की भी उनमें क्षमता है। प्रकृति की सुकुमारता में वे रहने वाले व्यक्ति नहीं, उसके उग्र विद्रूप और विषम रूप में उनकी प्रकृति रहती है भवभूति भावना को पकड़ कर मानव जीवन के उस उत्स में प्रविष्ट हो जाते हैं। जिस इस धार से जीवन अनुप्राणित एवं रसाप्लावित होकर प्रवाहमान रहता है। यही रसधारा जीवन को सरस बनाती है। कई भावों की एकत्र उपस्थिति का बड़ा ही मनोरम वर्णन भवभूति ने किया है। तथा कवि का प्राकृत भाषा में भी प्रेम दर्शनीय है यद्यपि महावीरचरित में तथा उत्तरराम चरित में प्राकृत की कमी है पर मालती माधव में इसकी बहुलता दर्शनीय है। कहीं–कहीं तो विभिन्न स्थलों पर एक शब्द के दो रूपों का प्रयोग हुआ है जैसे कहीं 'वट्‌टदि' है तो कही 'बटठइ'।[4] प्राकृत के विषय में सामान्यतः कवि ने सौरशेनी प्राकृत तक ही अपने को सीमित रखा है। डी0एल0राय ने भवभूति की भाषा की प्रशंसा की है जहाँ कलिदास की भाषा अपनी सरलता में महत्त्व रखती वहाँ भवभूति की भाषा की गम्भीरता भी कम महत्त्व की नही। शब्द ब्रह्मविद् तथा परिणत प्रज्ञ पासरजनश्लाध्य भाषा के पक्षपाती नहीं। उनकी घोर गम्भीर भाषा का अपना विशेष स्थान हैं। वस्तुतः काव्यकर्म में भाषा का यही महत्त्व है।[5] काव्यकर्म के दो अंग है– अनुभूति और वर्णना। वर्णना के लिए ही भाषा की अपेक्षा होती है कवि की अनुभूति कितनी भी प्रखर कितनी भी सच्ची और कितनी भी मार्मिक क्यों

न हो पर जब तक सशक्त भाषा के माध्यम से वह अवतरित प्रवाहित न हो तब तक किस काम की भवभूति की भाषा सशक्त है और भावव्यंजना में पूर्णतः सफल है। पद वाक्य प्रमाणज्ञ भवभूति वाणी के धनी है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1— उत्तररामचरितम्, 1/2।

2— मालतीमाधवम्, 9/15।

3— उत्तररामचरितम्, 1/2।

4— टोडरमल कृत महावीरचरित की प्रस्तावना, पृष्ठ 28—29।

5— संस्कृत साहित्य की रूपरेखा : पाण्डेय एवं व्यास, पृष्ठ 145—146।